शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

कश्मीर समस्या का भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रभाव

प्राप्तिः 26.05.2023
स्वीकृतः 24.06.2023

30

प्रो० (डॉ०) अनीता सिंह
इतिहास विभाग
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतम बुद्धनगर
ईमेलः *gargi2301@gmail.com*

नेहा शर्मा
शोधार्थी
इतिहास विभाग
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतम बुद्धनगर
ईमेलः *nehaupsc1987@gmail.com*

सारांश

भारतीय उपमहाद्वीप पश्चिमी एशिया के बाद सबसे ज्यादा विवादों, अशान्ति, असुरक्षा वाले स्थानों में गिना जाता है। साथ ही इसमें परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के होने के कारण चिन्ताएं और भी अधिक बढ़ जाती है। यद्यपि ढेर सारी समस्याएं होने के बावजूद भी कश्मीर समस्या का भारतीय उपमहाद्वीप में शान्ति व सुरक्षा बनाए रखने में महत्वपूर्ण स्थान है। भारत दक्षिणी एशियाई क्षेत्र के मध्य में स्थित है और इस उपमहाद्वीप के पश्चिम, उत्तर–पश्चिमी, उत्तर–पूर्व व पूर्व के ज्यादातर देश राजनैतिक अस्थिरता और आर्थिक समस्याओं में घिरे हुए है इसके साथ–साथ दूसरी तरफ भारतीय उपमहाद्वीप में हाल ही में चीन की विस्तारवादी नीतियों ने भी दक्षिण–एशियाई देशों के आन्तरिक मामलों में काफी हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया। भारतीय उपमहाद्वीप में ताजा स्थिति के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का हस्तक्षेप, प्रभाव व नीतियाँ भी काफी हद तक इसके लिए जिम्मेदार मानी जा सकती है। यदि समग्र हालात पर चर्चा की जाए तो यह पाएगें कि कश्मीर समस्या भारतीय उपमहाद्वीप पर बहुत अधिक प्रभाव डालती है। भारतीय उपमहाद्वीप की मुख्य समस्याओं में से एक समस्या कश्मीर भी है। भारतीय उपमहाद्वीप के दो बड़े व शक्तिशाली देश भारत व पाकिस्तान 1947 में आजादी से लेकर आज तक कश्मीर समस्या पर उलझे हुए हैं तथा दूसरी तरफ अन्य देश भी अपने–अपने रिश्तों व हितों के मध्य नजर कश्मीर के बारे में अलग–अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

मुख्य बिन्दु

भारतीय उपमहाद्वीप, कश्मीर, पाकिस्तान, परमाणु, आतंकवाद, इस्लामीकरण, आई.एस.आई.एस।

भारतीय उपमहाद्वीप में मुख्य रूप से भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्ला देश, नेपाल, भूटान तथा म्यामाँर आदि देश शामिल है और अफगानिस्तान भी अन्तस्थः अपने आप को भारतीय उपमहाद्वीप

का ही एक अंग मानता है। भारत को आज के मानचित्र पर देखने पर पता चलता है कि भारतीय उपमहाद्वीप के उपरोक्त आठों देश सदियों से आपस में हर पहलुओं से जुड़े हुए हैं और आज इन देशों के अलग–अलग होने के बावजूद भी ज्यादातर इनकी मुख्य समस्याएं एक समान सी ही दिखाई देती है।[1] भारतीय उपमहाद्वीप की मुख्य समस्याओं में से एक समस्या कश्मीर भी है। भारतीय उपमहाद्वीप के दो बड़े व शक्तिशाली देश भारत व पाकिस्तान 1947 में आजादी से लेकर आज तक कश्मीर समस्या पर उलझे हुए हैं तथा दूसरी तरफ अन्य देश भी अपने–अपने रिश्तों व हितों के मध्य नजर कश्मीर के बारे में अलग–अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

यदि भारतीय उपमहाद्वीप की शान्ति व सुरक्षा का वर्णन करें तो कारण अनेक हो सकते हैं लेकिन उनमें कश्मीर मुख्य है। भारतीय उपमहाद्वीप के विस्तार के अनुरूप अगर सोचा जाए तो यह काफी बड़ा उपमहाद्वीप है जिसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में विशाल हिन्द महासागर व उत्तर में हिमालय की ऊँची–ऊँची बर्फीली चोटियाँ हैं। वहीं दूसरी तरफ इस उपमहाद्वीप का कुछ हिस्सा जंगल युक्त, कुछ रेतीला, कुछ में नदियाँ, तो कुछ हिस्सा पर्वत व पठारों से घिरा हुआ है। इसकी दक्षिण से उत्तर की लम्बाई 10,400 कि0 मी0 तो पूर्व से पश्चिम लम्बाई 1600 कि0 मी0 तक फैली हुई है।[2] प्राचीन काल में भारतीय उपमहाद्वीप बहुत ही सुरक्षित माना जाता था लेकिन मध्य–युग में इस उपमहाद्वीप पर अनेक विदेशी आक्रामकों ने आक्रमण किये, लेकिन आज के समय विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में हुए विकास के कारण भारतीय उपमहाद्वीप बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं रहा है। इस उपमहाद्वीप की शान्ति और सुरक्षा को कश्मीर समस्या ने भी काफी हद तक प्रभावित किया है। यदि देखा जाए तो भारत व पाकिस्तान के आपसी मतभेदों का खामियाजा इस उपमहाद्वीप की शान्ति व सुरक्षा की लगातार गिरती स्थिति ने झेला है।[3]

विगत लगभग 70 वर्षों में कश्मीर समस्या ने अनेकों बार भारतीय उपमहाद्वीप की शान्ति और सुरक्षा को खतरे में डाला है जिसके लिए 1948, 1962, 1965, 1971 व 1999 के कारगिल युद्ध इसके बेहतरीन उदाहरण माने जा सकते हैं। इन्हीं हालातों के मद्देनजर 1971 में भारतीय उपमहाद्वीप में एक नया देश बना जो बांग्लादेश के नाम से जाना जाता है। कश्मीर समस्या भारत, पाकिस्तान व अफगानिस्तान में आए दिन होने वाले विस्फोटों व घटनाओं के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर जुड़ी हुई है। कहीं न कहीं पूरे उपमहाद्वीप की सुरक्षा व शान्ति के लिए भी खतरा बनी हुई है। यद्यपि कुछ देश इस समस्या में सीधे तौर पर शामिल नहीं है फिर भी आंतकी गतिविधियों में शामिल समूह इन देशों के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु लगे रहते हैं जिसके कारण पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की शान्ति व सुरक्षा खतरे में पड़ती रही है।[4] दक्षिण एशियाई देशों के आपसी रिश्तों में कश्मीर भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भौगोलिक रूप से देखा जाए तो भारत को इस उपमहाद्वीप की प्रत्येक देश के साथ सीमाएँ लगती हैं, जिसमें भूमीय तथा जलीय दोनों प्रकार की सीमाएँ शामिल हैं। वृहदतर प्राचीन भारत के भूखण्ड में बने इन सभी देशों के रिश्ते वैसे तो आपस में सांस्कृतिक व जरूरतों के हिसाब से मधुर हैं फिर भी अनेकों ऐसी समस्या हैं जिनके कारण इन देशों के हितों का हमेशा आपस में टकराव होता रहता है। भारत इस उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश होने के कारण अपनी प्रभुता रखता है जिसके कारण छोटे पड़ोसी देशों के साथ भारत के रिश्तों को हमेशा शक की दृष्टि से देखा जाता रहा है। यदि देखा

जाए तो दक्षिणी एशियाई देशों के साथ भारत के सम्बन्ध हमेशा प्रमुख भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन इसके बावजूद इन सभी देशों का टकराव मुख्यतः भारत के साथ ही अधिक है। इसमें जल सम्बन्धी समझौतों को लेकर भारत–नेपाल, भारत–बांग्लादेश, भारत–पाकिस्तान, भारत–भूटान, भारत–म्यांमार आदि अनेक सम्बन्ध अभी भी जारी हैं। साथ ही भारत व श्रीलंका के मध्य भी अनेक बिन्दुओं पर कुछ मतभेद है।[5]

भारतीय उपमहाद्वीप में उपस्थित सभी देशों के आपसी रिश्तों में कश्मीर समस्या एक अलग ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भारत, पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान व सोवियत संघ के मध्य एक फल की तरह स्थित है, जिसकी तरफ पाकिस्तान व चीन जैसे राष्ट्र हमेशा हड़पने की नीति के लिए लालायित रहते हैं। कश्मीर मुद्दे पर भारत के खिलाफ अपना समर्थन जुटाने हेतु वहाँ के धर्म–गुरूओं ने दक्षिण–पश्चिम एशिया (अरब देश) में इसे एक हथकंड़े की तरह अपनाया व इस्लामी देशों को अपनी तरफ करने की कोशिश भी की है। इसी कड़ी में पाकिस्तान के शिक्षा मन्त्री श्री मुस्तफा ने तुर्की, ईरान व पाकिस्तान के साथ एक धार्मिक सभा भी की। इसके अलावा पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भी अब तक भी अपना राग समय–समय पर आज भी अलापता रहा है।[6] भारतीय उपमहाद्वीप के सीमा विवादों पर कश्मीर समस्या का कितना प्रभाव है उसका यहां पर वर्णन किया गया है। भारतीय उपखण्ड की मुख्य भूमि और बेट (टापू) अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के कारण एक दूसरे से अलग हुए हैं। भारत का सबसे नजदीकी देश श्रीलंका है। 'पाल्क की समूरधुनी' के आधार पर भारत व श्रीलंका अलग हुए हैं। पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी के बाद म्यामाँर, मलेशिया, इंडोनेशिया, वियतनाम आदि देश हैं। भारत के पश्चिम में पाकिस्तान, ईराक आदि देश स्थित हैं जो कहीं न कहीं आपस में टकराव की स्थिति में रहते हैं।[7] भारत की उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत द्वारा निर्धारित की गई है। हिमालय पर्वत पार करने के उपरान्त चीन का सिक्यिांग प्रदेश भारत का पड़ोसी माना जाता है। इसके पूर्व में अफगानिस्तान और रूस का ताजीक प्रजास्थात्मक देश स्थित है। इस प्रकार कश्मीर बिन्दू पर एशिया के पाँच राष्ट्रों की सीमाएँ मिलती हैं जिनमें चीन, रूस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत हैं।[8] भारत की उत्तरी सीमा जब दक्षिण की ओर दक्षिण पूर्व दिशा में मिलती है तो वहां पर नेपाल राष्ट्र आता है। भारत की उत्तरी सीमा दक्षिण की ओर जहां पर मिलती है उसी जगह पर म्यामाँर, चीन और भारत की सीमाएँ आपस में मिली हुई हैं जो एक दूसरे को कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है।[9] 1971 में पूर्व पाक में से ही स्वतन्त्र बांग्लादेश राश्ट्र का निर्माण हुआ था जिससे भारत के आसाम, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय आदि राज्यों की सीमाएँ मिलती हैं।[10] भारत की कुल भू–सीमा 15167 कि0 मी0 लम्बाई की है जबकि सागरीय सीमा 7516.60 कि0 मी0 की है।[11] बांग्ला देश के बनने से भारत पूर्वी दिशा में कुछ सुरक्षित सा हो गया है। पाकिस्तान ने 74114 वर्ग कि0 मी0 भारतीय क्षेत्र पर कब्जा किया हुआ है और इसमें से उसने 5180 वर्ग कि0मी0 का प्रदेश चीन को दे दिया है। इसी तरह दूसरी तरफ 1962 युद्ध के दौरान चीन ने भी भारत के 37535 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था।[12] जिसकी सबसे बड़ी वजह नेहरू का लचीला रवैया था।

यदि भारतीय उपमहाद्वीप के सीमा विवादों पर गहराई से देखा जाए तो पाएगें कि लगभग प्रत्येक देश कहीं न कहीं अपने पड़ोसियों के साथ सीमा विवाद में उलझे हुये है, इसमें मुख्य पाकिस्तान व अफगानिस्तान के बीच 'डुरंड रेखा 1896'[13] तथा भारत व चीन के मध्य 'मैकमोहन रेखा 1914'[14] भारत तथा पाकिस्तान के बीच 'रैडक्लिफ रेखा, 17.8.1947'[15] मुख्य विभाजन करने वाली सीमा रेखाएँ हैं। परन्तु

आज भी इन रेखाओं पर पूर्ण रूप से सहमति नहीं बन सकी है। ये सभी विवादित रेखाएँ कश्मीर राज्य से ही जुड़ी हुई हैं और कश्मीर राज्य के भौगोलिक व आर्थिक रूप से समृद्ध होने के कारण ही सभी पड़ोसी देश इस राज्य पर अपना हक जताते रहे हैं।

भारत के द्वारा 11 व 13 मई 1998 को पोखरण (राजस्थान) में 5 परमाणु बमों का परीक्षण किया गया।[16] जिसके जवाब में पाकिस्तान द्वारा 28 व 30 मई, 1998 को बलुचिस्तान राज्य में 6 परमाणु परीक्षण किए गए।[17] उपरोक्त परमाणु परीक्षणों के पश्चात् भारत ने अन्तर्राश्ट्रीय समुदाय को बताया कि उसका परमाणु कार्यक्रम केवल ऊर्जा जरूरतों व स्वास्थ्य आदि कारणों के लिए होगा तथा भविष्य में होने वाले किसी भी युद्ध में परमाणु बम की पहल भारत की तरफ से नहीं की जाएगी। इस तरह से देखा जाए तो दोनों देशों के परमाणु परीक्षणों का सीधा असर भारतीय उपमहाद्वीप के आर्थिक गलियारों के साथ–साथ राजनैतिक रिश्तों पर भी पड़ा। भारतीय उपमहाद्वीप के शेष बचे 5 देशों ने एन0पी0टी0 व सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर किए हुए हैं[18] जिसके अनुसार यह देश न तो परमाणु तकनीक का ईजाद करेंगे व न ही परमाणु अस्त्र–शस्त्र की तरफ कोई भविष्य में प्रगति करेंगे। भारतीय उपमहाद्वीप में परमाणु बम का प्रयोग किए जाने की सम्भावनाएँ दुनिया के अन्य किसी भी जगह की तुलना में यहां पर बहुत ज्यादा हैं क्योंकि भारतीय उपमहाद्वीप की दोनों परमाणु सम्पन्न शक्तियों का इतिहास पिछले पचास सालों के दौरान चार युद्ध लड़ने का रहा है व इसका मुख्य कारण कश्मीर समस्या का आज तक न सुलझ पाना भी है। कश्मीर को लेकर भारतीय उपमहाद्वीप के यह दोनों मुख्य देश आए दिन आमने–सामने रहते हैं जिसके कारण परमाणु युद्ध की आशंका और भी बढ़ जाती है।[19] वहीं दूसरी तरफ भारतीय उपमहाद्वीप में परमाणु खतरे का एक अन्य कारण पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना का ताकतवर होना, लोकतन्त्र की कमजोर जड़े व आतंकवादी संगठनों का आई.एस.आई. व पाकिस्तानी सेना से गठजोड़ होना भी है। देखा जाए तो इस देश में लोकतन्त्र की जड़े शुरू से कमजोर रही हैं व सरकार के ज्यादातर निर्णयों पर हमेशा पाकिस्तानी सेना व आई.एस.आई. का प्रभाव रहता है। कश्मीर समस्या को मद्देनजर रखते हुए आंतकवादी संगठनों को पाकिस्तान का समर्थन होने से परिमाणु हथियारों के जखीरे तक उनकी पहुँच का डर हमेशा लगा रहता है। इसका एक उदाहरण पाकिस्तान के भूतपूर्व परमाणु वैज्ञानिक डॉ0 खान द्वारा परमाणु तकनीक; ईरान, लीबिया और उत्तर कोरिया को बेचना भी है।[20] अतः भारतीय उपमहाद्वीप में तनाव का मुख्य कारण कश्मीर समस्या ही है ऐसे में दोनों प्रतिद्वन्द्वी देशों के परमाणु शक्ति सम्पन्न होने के कारण इस क्षेत्र में परमाणु युद्ध की आशंका हमेशा बनी रहती है। भारतीय उपमहाद्वीप में आंतकवाद का जन्मदाता मुख्य रूप से पाकिस्तान को ही माना गया है। 1948, 1965 व 1971 की आमने–सामने की लड़ाईयों में एक तरफा हार के बाद पाकिस्तान ने पाया कि वह भारत के साथ सीधी लड़ाई में कभी नहीं जीत सकता और यदि उसे कश्मीर समस्या को जीवित रखना है तो उसके लिए छद्म युद्ध, गुरिल्ला पद्धति ही एक मात्र विकल्प के तौर पर मौजूद है।[21]

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आज भी पाकिस्तान द्वारा अनेक आतंकवादी व जेहादी संगठनों का पोषण किया जा रहा है उन्हें पाकिस्तानी गुप्तचर एंजेसी आई.एस.आई. व पाकिस्तानी सेना के द्वारा खुली मदद की जा रही है।[22] इन आंतकी शिविरों में प्रशिक्षित आत्मघाती आंतकवादी बार्डर पार करके भारत में निर्दोश व्यक्तियों की हत्या कर आंतकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। पाकिस्तान के द्वारा ऐसे संगठनों को

पाकिस्तानी सेना व पाक सरकार द्वारा सहायता दी जा रही है जोकि भारतीय उपमहाद्वीप में अशान्ति फैलने का मुख्य कारण माना जा सकता है।[23] भारतीय उपमहाद्वीप में आंतकवाद से प्रभावित अन्य देशों में श्रीलंका व बांग्लादेश का नाम भी लिया जा सकता है। भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी गंभीर समस्याओं में आंतकवाद का नाम सबसे ऊपर गिना जा सकता है। आजकल आंतकवाद का एक नया गुट आई.एस.आई.एस. भी भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी जड़े जमा चुका है। इस भयंकर स्थिति को देखते हुए यदि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय कश्मीर समस्या का स्थाई समाधान चाहता है तो उसे इस क्षेत्र से आंतकवाद को समाप्त करना ही होगा[24] तभी इस महाद्वीप में शान्ति स्थापना संभव होगी। भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार व पर्यटन का वर्णन करें तो कश्मीर भी इसमें अपना अहम योगदान दे सकता है। व्यापार के क्षेत्र में बढ़ती वैष्विक प्रतिस्पर्धा ने भी भारतीय उपमहाद्वीप को विश्व बाजार में एक मण्डी के रूप में स्थापित कर दिया है। किसी भी क्षेत्र में व्यापार का मुख्य केन्द्र बिन्दु सुगम यातायात, सस्ती मजदूरी, कच्चे माल की उपलब्धता व तैयार माल की माँग आदि व्यवस्थाओं पर निर्भर करता है। ये सभी कारक इस अध र्विकसित क्षेत्र में पूर्णतः उपलब्ध है। यही कारण है कि इस समय विश्व की सभी प्रमुख कम्पनियां व व्यापारी वर्ग इस क्षेत्र को पूंजी निवेश के लिए सर्वोत्तम मानती है। दक्षिण एशियाई देशो के सार्क संगठन ने भी व्यापार व पर्यटन में सुगमता को बढ़ावा दिया है। इसी के तहत दिसम्बर, 1995 में साफ्ता (South Asian Preferential Trade Agreement) का निर्माण किया गया था जिसके तहत भारतीय उपमहाद्वीप के सभी देशों में कर मुक्त व्यापार की सुविधा दी गई थी।[25]

यद्यपि भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार की सभी आवश्यक स्थितियाँ उपलब्ध हैं परन्तु फिर भी यह क्षेत्र व्यापार में इतनी ज्यादा उन्नति नहीं कर पाया है तो इसका एक मात्र कारण साम्प्रदायिक उन्माद है। किसी भी व्यापार को फलने–फूलने के लिए सुरक्षा की स्थिति का होना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु साम्प्रदायिकता और कश्मीर समस्या के कारण यह सब सम्भव नहीं हो पा रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप को प्रकृति ने विशाल प्राकृतिक सौन्दर्य से नवाजा है जिसमें हिमालय की बर्फीली चोटियां, नदियां, कश्मीर घाटी के हरे–भरे मैदान, समुद्र तट, रेगिस्तान व डेल्टा आदि क्षेत्र पर्यटन के हिसाब से मौजूद हैं। यही नहीं कश्मीर को तो धरती पर 'स्वर्ग के नाम से' भी पुकारा जाता है और इस क्षेत्र में पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ भी विध्मान है परन्तु भारतीय उपमहाद्वीप में कश्मीर समस्या के कारण पर्यटन भी पर्याप्त संख्या में नहीं पनप पा रहा है। इसका मुख्य कारण लोगों में असुरक्षा की भावना का होना भी है जिसका उदाहरण 2008 के मुम्बई हमले से लिया जा सकता है क्योंकि इस हमले के तुरन्त बाद भारतीय उपमहाद्वीप के तमाम पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या में भारी कमी आने लगी। भारतीय उपमहाद्वीप में मीडिया व मानवाधिकारों के हनन का समय–साथ पर अलाप होता रहता है विशेषकर कश्मीर के मामलों में तो और भी भारतीय उपमहाद्वीप को मीडिया की स्वायत्ता प्रदान करने व मानवधिकारों की रक्षा करने की विश्व सूची में बहुत नीचे स्थान दिया जाता है, तो इसका एकमात्र कारण पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, बलुचिस्तान, अफगानिस्तान, जम्मू–कश्मीर आदि इसके मुख्य कारक है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर तथा वहां के बलुचिस्तान प्रांत में मीडिया को पाकिस्तानी सेना की अनुमति के बिना किसी भी हालात पर रिर्पोट करने की अनुमति नहीं है, ऐसी परिस्थितियों में केवल वही हालात व स्थिति पाकिस्तानी सेना मीडिया के द्वारा विश्व समुदाय को दिखाना चाहती है, जो कि उन्हें सुगम लगती है। जब कि वास्तविक स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत होती है। यदि मीडिया को पूरी स्वतन्त्रता के साथ पाकिस्तान अधिकृत

कश्मीर, बलुचिस्तान व सिन्ध प्रांत में कार्य करने दिया जाए तो वहां की भयानक स्थिति को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।[26]

ऐसी ही कुछ परिस्थितियाँ अफगानिस्तान में तालिबान व अन्य आतंकवादी गुटों के द्वारा पैदा कर दी गयी है। इन्हीं परिस्थितियों के कारण मानवाधिकारों का हनन विश्व समुदाय की अपेक्षा से कहीं बड़े स्तर पर किया जा रहा है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर व बलुचिस्तान में तो आजादी के लिए उठती प्रत्येक आवाज को गोलियों के साथ दबा दिया जाता है। इस तरह के किसी भी अन्याय के लिए उन्हें किसी भी प्रकार की कानूनी सहायता भी उपलब्ध नहीं हो पाती। अतः इस प्रकार कह सकते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप के पाकिस्तान व अफगानिस्तान इलाके में मीडिया व मानवधिकारों का हनन आज भी एक आम बात हो गई है। यह इस क्षेत्र के विकास के लिए विश्व समुदाय हेतु चिन्ता का मुख्य विशय भी है। अतः विश्व समुदाय को इस समस्या का जल्दी से जल्दी समाधान निकालना चाहिए वरना आगे चलकर यह और भी भयावह हो सकती है। भारतीय उपमहाद्वीप में चीन का लगातार हस्तक्षेप कश्मीर समस्या को और भी बढ़ावा देने में प्रयासरत है। जब भारतीय उपमहाद्वीप के देश राजनैतिक अस्थिरता व आर्थिक तंगहाली से गुजर रहे थे तो उसी समय 1951 में तिब्बत पर कब्जा करने के साथ ही चीन भी भारत का आठवां पड़ोसी देश बन गया। चीन ने बहुत जल्दी ही इस उपमहाद्वीप की स्थितियों को भांप लिया व भारत के सभी पड़ोसी देशों को राजनैतिक, आर्थिक व सैन्य मदद उपलब्ध करवाने की चाल चली। इसी का एक परिणाम पाकिस्तान व चीन की गहरी दोस्ती का होना है। चीन भारतीय उपमहाद्वीप में छद्म–युद्ध की नीति पर कार्य कर रहा है तथा भारत के चारों तरफ पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यामाँर, मालद्वीप आदि देशों को भारत के विरुद्व भड़काने में लगा हुआ है[27] ताकि भारत की बढ़ती हुई आर्थिक एंव अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति को रोककर कमजोर करने में लगा हुआ है। जहां तक कश्मीर मसले की बात है तो कश्मीर राज्य की कुल भूमि का 45 प्रतिशत हिस्सा भारत व 35 प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है तथा 20 प्रतिशत भूमि अक्साई चीन व सक्षगम घाटी (जो 1963 में पाकिस्तान ने चीन को दी थी) के रूप में चीन के कब्जे में है। चीन के द्वारा जिनजियांग क्षेत्र में गिलगित, बाल्टिस्तान के रास्ते 1986 में कराकोरम हाइवे का निर्माण भी किया गया है, जिसके नवीनीकरण का कार्य अब चल रहा है। इस कार्य के पूर्ण हो जाने पर चीन की पहुँच पाकिस्तान के 'ग्वादर बन्दरगाह' से सीधे खाड़ी देशों तक हो जाएगी जो कहीं न कहीं भारत के हितों को भी प्रभावित करेगी।[28] वहीं दूसरी तरफ बांग्लादेश चीन के लिए भारत के उत्तरपूर्व के क्षेत्र को घेरने हेतु सबसे उपर्युक्त जगह है। चीन की नजर हमेशा बांग्लादेश के असीमित गैस भंडार पर भी बनी रहती है। साथ ही इन दिनों चीन बांग्लादेश का सबसे बड़ा हथियार सप्लायर भी है चीन ही बांग्लादेश के चिटगांव बन्दरगाह को हाल में विकसित भी कर रहा है। तथा बांग्लादेश के क्षेत्र चिटगांव में ही चीन के द्वारा एक 'मिलिट्री बेस' भी तैयार किया जा रहा है।

दूसरी तरफ म्यामाँर के लिए चीन सबसे बड़े व्यापारिक सांझीदार के रूप में उभर रहा है तथा वह म्यामाँर के समुद्री बन्दरगाह क्याकपंऊ से कनमिंग तक रेलवे लाईन भी बिछा रहा है जिसके कारण इस व्यापारिक साझेदारी को सुदृढ़ रूप से स्थापित किया जा सके। यही नहीं चीन श्रीलंका के साथ भी द्विपक्षीय व्यापार व सैन्य सहयोग को बढ़ावा दे रहा है। इस नीति के तहत ही श्रीलंका के पश्चिमी तट पर 'हम्बनटोटा' नामक बन्दरगाह का निर्माण भी चीन के द्वारा किया जा रहा है।[29] अतः चीन अपनी 'स्ट्रींग

ऑफ पर्लस' की नीति के तहत उत्तरी हिन्द महासागर में भारत को घेरने के लिए म्यामाँर में हंगरे बन्दरगाह, बांग्लादेश में चिंटगांव बन्दरगाह, श्रीलंका में हबनतोता बन्दरगाह तथा मालद्वीप व पाकिस्तान में ग्वादर बन्दरगाह का निर्माण कर रहा है, ताकि उसके द्वारा भारत को राजनैतिक, आर्थिक व सैन्य तौर पर आसानी से घेरा जा सके। अपनी कूटनीतिक चालों के द्वारा वह एक तरह से अपने साम्राज्यवाद को बढ़ावा दे रहा है।[30] इस प्रकार भारतीय उपमहाद्वीप में चीन के दखल का विस्तृत तौर पर विष्लेशण किया जाए तो चीन की नीति सार्क–देशों में भारत को अलग–थलग करने की है और वह भारत के पड़ोसी देशों को राजनैतिक, आर्थिक व सैन्य लालच देकर अपने पक्ष में करने की पुरजोर कोशिश भी कर रहा है। अतः चीन की इसी नीति के कारण भारतीय उपमहाद्वीप के दिन–प्रतिदिन हालात विस्फोटक बनते जा रहे हैं जिसके कारण कभी भी युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। साथ ही यदि कश्मीर मसले पर चीन के दखल को देखा जाए तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है कि चीन द्वारा पाक–अधिकृत कश्मीर के लगभग 5000 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र को एक तरह से अपने अधिकार में लेने के पीछे चीन की मंशा भारत व पाकिस्तान के मध्य वैमनयस्ता को स्थायी रूप देना है ताकि कश्मीर के सुदुर–उत्तरी क्षेत्र में हाईवे बनाने से उसकी पहुँच सीधी खाड़ी देशों तक हो जाए।[31] यदि भारत तथा पाकिस्तान के मध्य युद्ध शुरू हो जाता है तो चीन आसानी से पाकिस्तान व खाड़ी देशों को आधुनिक हथियारों की पूर्ति भी कर सकता है। अतः इस परिस्थिति को देखते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में चीन का दखल केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु एक कदम ही नहीं है अपितू समस्त उपमहाद्वीप पर अपना अधिकार करना है उसका इन देशों के विकास तथा उत्थान से कोई लेना देना नहीं है इसके साथ–साथ ही चीन भारतीय उपमहाद्वीप के इन देशों को केवल चीनी सामान के उपभोक्ता बनाकर अपनी बाजारीय व्यवस्था को मजबूती से स्थापित करना चाहता है ताकि उसके उद्योग धन्धों के उत्पादन को इन देशों में खपाया जा सके। चीन का सामान सस्ती दरों पर इन देशों में आज धड़ल्ले से बेचा जा रहा है जो विश्व व्यापार संगठन का नारा देकर अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए दिन रात साम्राज्यवादी नीति को अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दे रहा है।

सन्दर्भ

1. सिंह, आर0पी0. भारतीय उपमहाद्वीप में आंतकवाद. पृष्ठ **235–236.**
2. वहीं. पृष्ठ **54.**
3. वाजेपयी, अरूणोदय. समकालीन विश्व एवं भारत प्रमुख मुद्दे. पृष्ठ **59–60.**
4. वही. पृष्ठ **59–60.**
5. कॉपोरेटिव सिक्योरिटी फ्रेमवर्क फॉर साउथ एशिया. पृष्ठ **73.**
6. इण्डिया सिक्योरिटी इन रसूरगैन्ट एशिया. पृष्ठ **173.**
7. बघेल, विरेंन्द्र सिंह. राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां. पृष्ठ **126.**
8. सिंह, मेजर ब्रहम. ब्रिटिश डिप्लोमेसी इन कश्मीर. पृष्ठ **2.**
9. खन्ना,बी0एन0. भारत की विदेश नीति. पृष्ठ **206–207.**
10. दीक्षित, जे0एन0. भारत पाक संबंध. पृष्ठ **197.**
11. बघेल, विरेंन्द्र सिंह. राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां. पृष्ठ **127.**

12. खन्ना,बी0एन0. (2008). भारत की विदेश नीति. पृष्ठ **160.**
13. भारत ज्ञान कोश. पोपुलर प्रकाशनः मुम्बई. पृष्ठ **324.**
14. नुरानी, ए0जी0. (2003). परसीवेरंस इन पीस परोसेस. फ्रंट लाईन 29 अग्रस्त।
15. ए0बी0सी0. (1948). रीड एंड फिशर दा पराउडेस्ट डे. पृष्ठ **482.**
16. दीक्षित, जे0एन0. भारत पाक संबंध. पृष्ठ **376.**
17. वहीं. पृष्ठ **381.**
18. पोल, लोस. दा सी0टी0बी0टी0 एंड दा राईज ऑफ न्युक्लियर नैशलाईजेशन इन इंडिया. पृष्ठ **99.**
19. बघेल, विरेंन्द्र सिंह. राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां. पृष्ठ **128.**
20. (2004). न्यूयार्क टाईमस. 29 जनवरी।
21. सिंह, आर0पी0. भारतीय उपमहाद्वीप में आंतकवाद. पृष्ठ **116.**
22. सहगल, मेजर जनरल विनोद. अन्तर्राष्ट्रीय आंतकवाद. पृष्ठ **45.**
23. वही. पृष्ठ **120.**
24. रितु, कृष्ण कुमार. (2005). दक्षिण एशिया आंतक और साया. सार्क घोषणाएं. पृष्ठ **44–45.**
25. वाजेपयी, अरूणोदय. समकालीन विश्व एंव भारत प्रमुख मुद्दे. पृष्ठ **92.**
26. (2017). सी0पी0एन0ई0 रिपोर्ट 25 अक्तूबर।
27. बघेल, विरेंन्द्र सिंह. राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां. पृष्ठ **130.**
28. बीयूरक, एन्डरू. (2007). लोनली प्लेनेट. पृष्ठ **838.**
29. हम्बनटोटा. (2010). पोर्ट टू0बी0 ओपन ऑन प्रेजीडेन्ट बर्थडे केमल डेली मीरर 27 फरवरी।
30. न्यू डायमनशन् ऑफ सिक्योरिटी चैलन्जिस इन साउथ एशिया. पृष्ठ **65–71.**
31. ग्रेबर, जॉन. प्रोटकटिड कान्टेस्ट सीनो–इंडियन रिवेलवरी इन 20 सैन्चूरी. पृष्ठ **83.**